NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 4-09-2024

विषय सूची

सड़क यातायात में होने वाली मृत्यु को कम करने के लिए सुरक्षा उपायों में तेजी लाएं

लोथल डॉकयार्ड सिद्धांत में नई अंतर्दृष्टि

ईरान-अमेरिका संबंधों का संक्षिप्त इतिहास

भारत में सूक्ष्म पोषक तत्वों का कुपोषण

आर्थिक विकास के लिए जैव प्रौद्योगिकी का उपयोग

संक्षिप्त समाचार

ना अंका अकाल

कोको (थियोब्रोमा काकाओ)

अपराजिता बिल

विषाणु युद्ध अभ्यास

ब्रुनेई दारुस्सलाम

निवेशक शिक्षा और संरक्षण निधि प्राधिकरण

पूंजी बाजारों का वित्तीयकरण

क्राब द्वारा पूंजी अधिग्रहण प्रस्ताव

सड़क यातायात में होने वाली मृत्यों को कम करने के लिए सुरक्षा उपायों में तेजी लाएं

सन्दर्भ

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र के देशों से सड़क यातायात से होने वाली मृत्यों को कम करने के उपायों में तेजी लाने का आह्वान किया है, जो 15 से 29 वर्ष की आयु के लोगों में मृत्यु का एक प्रमुख कारण है।

परिचय

- दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र में सड़क यातायात से होने वाली मृत्यों में पैदल चलने वालों, साइकिल चालकों और दो या तीन पहिया वाहनों सहित कमज़ोर सड़क उपयोगकर्ताओं की हिस्सेदारी 66% है।
- 2021 में अनुमानित वैश्विक सड़क यातायात मृत्यों में से 1.19 मिलियन में से 3,30,223 मृत्यु इसी क्षेत्र में हुईं, जो वैश्विक भार का 28% है। WHO दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र, तेजी से शहरीकरण के बीच, निम्नलिखित चुनौतियों का सामना कर रहा है,
  - मोटर चालित दोपहिया और तिपहिया वाहनों का उच्च प्रचलन,
  - अपर्याप्त यातायात क्षति डेटा,
  - पैदल यात्री और साइकिल चालक के लिए खराब बुनियादी ढाँचा, और सीमित आपातकालीन सेवाएँ।
- अनुमान है कि 2030 तक वैश्विक जनसंख्या का 70% भाग शहरी क्षेत्रों में रहेगा, जिससे सार्वजनिक परिवहन की मांग बढ़ेगी।

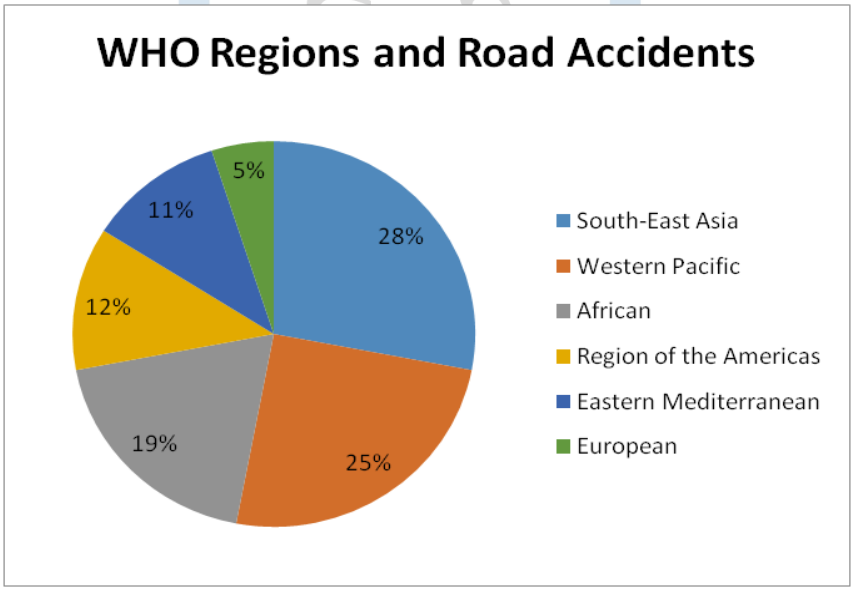

भारत में सड़क दुर्घटनाएँ

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, भारत में प्रत्येक वर्ष सड़क पर 3,00,000 लोगों की मृत्यु होने का अनुमान है।

- यह प्रत्येक दिन प्रत्येक घंटे 34 से अधिक लोगों की मृत्यु के बराबर है। भारत में, सड़क दुर्घटनाओं से राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद का 5% से 7% हानि होने की संभावना है।

बेहतर सुरक्षा के लिए केन्द्रित क्षेत्र

- **हेलमेट का उपयोग:** इसे मोटरसाइकिल चालकों के साथ-साथ उनकी पिछली सीट पर बैठे यात्रियों के बीच भी लागू किया जाना चाहिए। हेलमेट के सही उपयोग से घातक चोटों के जोखिम में 42% की कमी आ सकती है।
- **तेज़ गति को कम किया जाना चाहिए:** भारत में सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मृत्युओं में से 70% तेज़ गति से चलने के कारण होती हैं। साथ ही, शराब पीकर गाड़ी चलाने की भी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए।
- **सड़क के बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाया जाना चाहिए:** विभिन्न सड़कें सुरक्षित स्थिति में नहीं हैं, हालाँकि हाल के वर्षों में सरकारी कार्यक्रमों के कारण तेज़ी से सुधार हुआ है।
- **व्यवहार में परिवर्तन:** व्यवहार में परिवर्तन सुनिश्चित करने के लिए बड़े पैमाने पर सार्वजनिक जागरूकता अभियान जैसे कि सड़क सुरक्षा के लिए संयुक्त राष्ट्र का नया वैश्विक अभियान #MakeASafetyStatement, जिसमें अंतरराष्ट्रीय हस्तियाँ सम्मिलित हों, चलाया जाना चाहिए।

भारत द्वारा उठाए गए कदम

- मोटर वाहन (संशोधन) अधिनियम, 2019 का कार्यान्वयन।
  - इस अधिनियम में यातायात उल्लंघन के लिए दंड में वृद्धि, इसकी इलेक्ट्रॉनिक निगरानी, किशोरों द्वारा वाहन चलाने पर दंड में वृद्धि,
- वाहन फिटनेस परीक्षणों का कम्प्यूटरीकरण/स्वचालन, दोषपूर्ण वाहनों को वापस बुलाना, तृतीय पक्ष बीमा को सुव्यवस्थित करना तथा हिट एंड रन मामलों में अधिक मुआवजे का भुगतान आदि।

वैश्विक उपाय

- सड़क सुरक्षा, एक सार्वजनिक स्वास्थ्य और विकास प्राथमिकता, संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण है।
- सितंबर 2020 में, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने सड़क सुरक्षा 2021-2030 के लिए कार्रवाई का दशक शुरू किया, जिसका उद्देश्य 2030 तक सड़क यातायात से होने वाली मृत्युओं और चोटों को कम से कम 50% तक कम करना है।

आगे की राह

- निम्न और मध्यम आय वाले देशों को पैदल चलने वालों, साइकिल चालकों और दोपहिया तथा तिपहिया वाहनों के सवारों जैसे असुरक्षित सड़क उपयोगकर्ताओं की सुरक्षा को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है, जो अनुपातहीन रूप से उच्च जोखिम में हैं।
- सड़क सुरक्षा में सुधार के लिए आघात और आपातकालीन देखभाल प्रणालियों को दृढ करना, सड़क सुरक्षा डेटा को बढ़ाना, दृढ नेतृत्व और सभी हितधारकों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना आवश्यक है।

- जबकि WHO दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र में 2021 में सड़क दुर्घटनाओं में 2% की कमी देखी गई, जिसने वैश्विक स्तर पर 5% की कमी में योगदान दिया, वैश्विक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए और प्रयासों की आवश्यकता है।

Source: TH

लोथल डॉकयार्ड सिद्धांत में नई अंतर्दृष्टि

सन्दर्भ

- नए अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि हड़प्पा सभ्यता के दौरान गुजरात के लोथल में एक डॉकयार्ड उपस्थित था।

प्रमुख निष्कर्ष

- अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि हड़प्पा सभ्यता के दौरान साबरमती नदी लोथल (वर्तमान में, यह उस स्थान से 20 किमी दूर बहती है) के पास से बहती थी।
- अहमदाबाद को लोथल, नल सरोवर आर्द्रभूमि और छोटे रण से होते हुए धोलावीरा - एक अन्य हड़प्पा स्थल से जोड़ने वाला एक यात्रा मार्ग भी था।
- शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययन को इस परिकल्पना पर आधारित किया कि लोथल से कच्छ के रण से जुड़ा एक अंतर्देशीय नेटवर्क था।
- अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि व्यापारी खंभात की खाड़ी के माध्यम से गुजरात आए, संभवतः सामग्री प्राप्त करने के लिए रतनपुरा गए और उन्हें मेसोपोटामिया (आधुनिक इराक) ले गए।
- शोध डॉकयार्ड सिद्धांत का समर्थन करता है और ऐतिहासिक इनलेट के बारे में चिंताओं को संबोधित करता है, नदी तथा समुद्री मार्गों के माध्यम से व्यापार के लिए लोथल के महत्व को प्रदर्शित करता है।

लोथल

- लोथल (गुजराती में 'मृतकों का टीला') की खोज सरगवाला गाँव के दलदली खेतों के बीच एक टीले के नीचे की गई थी।
- लोथल में हड़प्पा नगर नियोजन की उपस्थिति जैसे कि घर, स्नान मंच, सड़कें, किले की दीवारें, कब्रिस्तान और बड़ी संरचनाएँ, इसे आसानी से हड़प्पा सभ्यता की चौकी के रूप में स्वीकार करने की अनुमति देती हैं।

- यह सिंध/बलूचिस्तान से शुरू होकर वर्तमान हरियाणा तक उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में केंद्रित था।

- 1950 के दशक में जब इसकी खोज हुई थी और माना गया था कि यह एक डॉकयार्ड है, तब से पुरातत्वविदों और विशेषज्ञों के बीच मतभेद रहे हैं।
  - कुछ लोगों ने तर्क दिया कि लोथल एक हड़प्पा डॉकयार्ड था, जो उस स्थान पर मिली खोजों पर आधारित था, जिसमें 222 x 37 मीटर का बेसिन (जिसे डॉकयार्ड होने का दावा किया जाता है), जहाजों या नावों को लंगर डालने के लिए एक घाट और हड़प्पा की मुहरों जैसी कलाकृतियाँ सम्मिलित हैं।
  - हालांकि सभी लोग डॉकयार्ड सिद्धांत को स्वीकार नहीं करते हैं, उनका तर्क है कि यह केवल आधुनिक समय में ही था कि भारतीय बंदरगाह सीधे समुद्र पर स्थित हो गए।

समुद्री व्यापार का समर्थन करने वाले अन्य साक्ष्य

- गुजरात में देवी सिकोतरा के विभिन्न मंदिर हैं, जिसका नाम सोकोत्रा द्वीप के नाम पर रखा गया है, ज लाल सागर के मुहाने पर स्थित है और 2,000 वर्ष से भी अधिक समय पहले भारतीय समुद्री यात्रियों के लिए एक आश्रय स्थल के रूप में कार्य करता था।
- ब्राह्मी लिपि में विभिन्न शिलालेखों से पता चलता है कि भारतीयों ने इस द्वीप का उपयोग मध्य पूर्व और पूर्वी अफ्रीका के व्यापारिक मार्ग पर एक महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में किया था।

हड़प्पा सभ्यता

- माना जाता है कि हड़प्पा सभ्यता मिस्र और मेसोपोटामिया के साथ विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है।
- इसका विकास सिंधु नदी के किनारे हुआ था और इसी कारण से इसे सिंधु घाटी सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है।
- हड़प्पा सभ्यता की पहचान कांस्य युग की सभ्यता के रूप में की जाती है क्योंकि यहाँ अनेक ऐसी वस्तुएँ पाई गई हैं जो तांबे आधारित मिश्र धातुओं से बनी हैं।

सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँ

- **शहरी नियोजन:** उनके शहर अच्छी तरह से नियोजित थे और उनके पास ईंट के घर थे जो सड़कों के किनारे स्थित थे।
  - हर घर में सीढ़ियाँ, रसोई और अनेक कमरे थे। उनके आँगन में कुएँ, बाथरूम थे और जल निकासी की उचित व्यवस्था थी।
- **आभूषण:** हड़प्पावासी सोने, चांदी, हाथी दांत, शंख, मिट्टी, अर्द्ध कीमती पत्थरों और अन्य से बने आभूषण पहनते थे।
- **व्यापार और वाणिज्य:** सभ्यता के पास व्यापक व्यापार नेटवर्क था, जो मेसोपोटामिया, अफगानिस्तान और अरब प्रायद्वीप तक विस्तारित था।
- **धर्म और प्रतीक विज्ञान:** हड़प्पा की कलाकृतियाँ विभिन्न प्रतीकों और रूपांकनों को दर्शाती हैं, जिनके बारे में माना जाता है कि वे धार्मिक विश्वासों से संबंधित हैं।

- इनमें "पुजारी राजा" जैसी आकृतियाँ और बैल जैसे पशुओं की छवियां सम्मिलित हैं, जो कुछ पशुओं के प्रति संभवतः श्रद्धा का संकेत देती हैं।

- **शिल्पकला और कलात्मकता:** हड़प्पावासी जटिल मिट्टी के बर्तन बनाते थे, जिनमें काले रंग से चित्रित आकृति वाले प्रसिद्ध लाल मिट्टी के बर्तन भी सम्मिलित थे।
  - उन्होंने स्टीटाइट, टेराकोटा और अन्य सामग्रियों से आभूषण, मूर्तियां और मुहरें भी बनाईं।
- **कृषि:** वे गेहूं, जौ, मटर और कपास जैसी फसलें उगाते थे।
- **सामाजिक संगठन:** समाज संभवतः स्तरीकृत था, साक्ष्यों से पता चलता है कि समाज में पदानुक्रमिक संरचना थी। यह आवास के आकार में भिन्नता और सार्वजनिक भवनों की उपस्थिति से संकेत मिलता है।
- **पतन और विलुप्ति:** हड़प्पा सभ्यता के पतन के कारणों पर अभी भी इतिहासकारों और पुरातत्वविदों के बीच वाद-विवाद होता है।
  - संभावित कारकों में पारिस्थितिकी परिवर्तन, जैसे नदी के मार्ग में परिवर्तन तथा आक्रमण और आंतरिक संघर्ष शामिल हैं।

प्रमुख हड़प्पा स्थल

स्थल	**वर्तमान में**
• हड़प्पा	• पंजाब, पाकिस्तान
• मोहनजोदड़ो	• **सिंध, पाकिस्तान**
• धौलावीरा	• गुजरात का कच्छ जिला,
• कालीबंगा	• राजस्थान
• लोथल	• गुजरात
• राखीगढ़ी	• हरियाणा
• चन्हुदड़ो	• सिंध , पाकिस्तान
• गनवेरीवाला	• पंजाब, पाकिस्तान
• सुत्कागेंडोर	• बलूचिस्तान प्रांत, पाकिस्तान
• आलमगीरपुर	• उत्तर प्रदेश

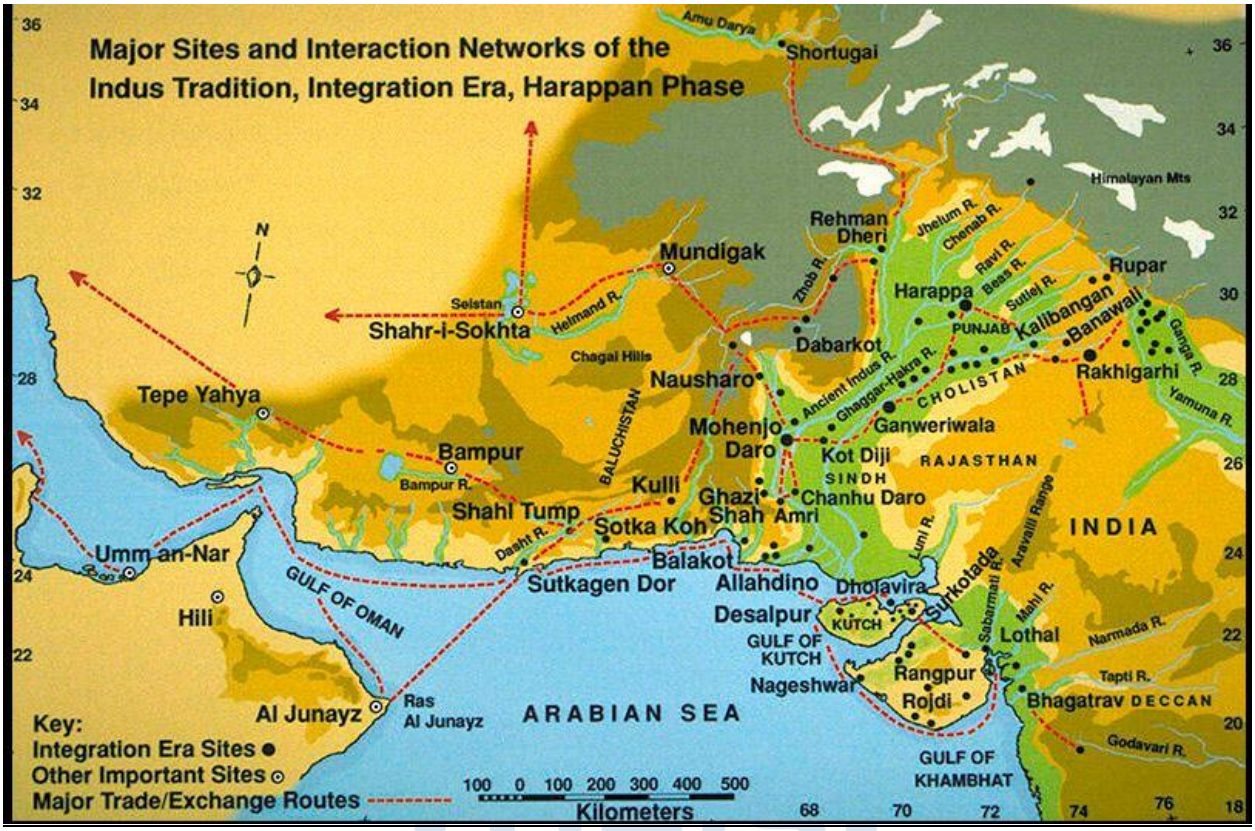

Source: IE

ईरान-अमेरिका संबंधों का संक्षिप्त इतिहास

समाचार में

- ईरान के सर्वोच्च नेता ने संकेत दिया कि यद्यपि अमेरिका पर विश्वास नहीं किया जा सकता, फिर भी परमाणु सहयोग के बारे में उनके साथ बातचीत करने में कोई बुराई नहीं है।

ईरान-अमेरिका संबंध:

- ईरान के परमाणु कार्यक्रम, मिसाइल क्षमताओं तथा क्षेत्रीय प्रभाव को लेकर अमेरिका और ईरान के बीच लंबे समय से तनाव चल रहा है।
    - अमेरिका का मानना है कि ईरान का परमाणु कार्यक्रम हथियारों के विकास को बढ़ावा दे सकता है, जबकि ईरान का कहना है कि उसका कार्यक्रम नागरिक उपयोग के लिए है।

ऐतिहासिक संबंध

- 1953 में, अमेरिका और ब्रिटेन ने ईरान के लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित नेता मोहम्मद मोसादेग को हटाने के लिए तख्तापलट की साजिश रची, जिन्होंने तेल संसाधनों का राष्ट्रीयकरण करने की मांग की थी।
    - अमेरिका ने शाह मोहम्मद रजा पहलवी का समर्थन किया, जिसने दमनकारी शासन स्थापित किया।

- 1979 में, अयातुल्ला खुमैनी के नेतृत्व में ईरानी क्रांति के परिणामस्वरूप एक इस्लामिक गणराज्य की स्थापना हुई और अमेरिका के साथ राजनयिक संबंध समाप्त हो गए।
- 1979 से, अमेरिका ने ईरान पर विभिन्न प्रतिबंध लगाए हैं, जिनमें व्यापार प्रतिबंध, हथियार प्रतिबंध और विदेशी बैंकों पर प्रतिबंध सम्मिलित हैं।

पिछले कार्य

- पिछली बार ईरान-अमेरिका द्विपक्षीय सहयोग के करीब 2015 में दिखे थे, जब ईरान और पश्चिमी देशों ने संयुक्त व्यापक कार्य योजना (JCPOA) पर हस्ताक्षर किए थे।
  - इसका उद्देश्य पश्चिमी आर्थिक प्रतिबंधों से राहत के बदले ईरान के परमाणु हथियारों के विकास को सीमित करना था।
- 2018 में ट्रम्प प्रशासन JCPOA से हट गया, जिससे अमेरिका-ईरान संबंधों में और गिरावट आई।

प्रभाव:

- JCPOA ने संबंधों में सुधार का प्रतिनिधित्व किया था, लेकिन 2018 में अमेरिका के इससे बाहर निकलने से यह कमजोर हो गया।
  - ईरान ने तब से अपने परमाणु कार्यक्रम में तेजी ला दी है, हालांकि उसका दावा है कि वह परमाणु हथियार नहीं चाहता।
- अमेरिका तथा ईरान के बीच चल रही दुश्मनी क्षेत्रीय अस्थिरता में योगदान देती है, जिसमें अमेरिका इजरायल का समर्थन करता है और ईरान अमेरिका एवं इजरायल की नीतियों का विरोध करता है।
- अमेरिकी प्रतिबंधों के कारण ईरान को गंभीर आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिसमें तेल निर्यात में गिरावट, मुद्रास्फीति और विकास में कमी सम्मिलित है।
  - इन परेशानियों के बावजूद, ईरान ऐतिहासिक रूप से प्रतिबंधों से निपटने में सफल रहा है।

ईरान के पक्ष में घटनाक्रम:

- **सऊदी-ईरान शांति समझौता:** मार्च 2023 में सऊदी अरब के साथ चीन की मध्यस्थता में शांति समझौता और ईरान के SCO और BRICS में सम्मिलित होने से ईरान की क्षेत्रीय स्थिति में सुधार हुआ है।
- **गाजा युद्ध:** गाजा संघर्ष में ईरान की भागीदारी से उसकी सैन्य क्षमताएँ उजागर हुईं।
- **ईरान की रणनीतिक साझेदारी:** ईरान ने रूस और चीन के साथ संबंधों को दृढ किया है और भारत के साथ अवसरों की खोज कर रहा है।
- **तेल और गैस भंडार:** ईरान के पास तेल और प्राकृतिक गैस के विशाल भंडार हैं, जो इसे वैश्विक ऊर्जा बाजारों में एक प्रमुख खिलाड़ी बनाते हैं।

ईरान के साथ भारत की सहभागिता:

- भारत ने पश्चिम एशिया में अपनी पहुंच बढ़ाई है, लेकिन भू-राजनीतिक और आर्थिक कारकों के कारण ईरान के साथ संबंध पूरी तरह से क्षमता के अनुरूप नहीं हैं।
- भारत SCO और BRICS जैसे मंचों के माध्यम से ईरान के साथ बहुपक्षीय संबंध बनाए रखता है।

- प्रमुख समझौतों में तेहरान घोषणा (2001) और नई दिल्ली घोषणा (2003) सम्मिलित हैं, हालांकि प्रतिबंधों और भू-राजनीतिक कारकों के कारण संबंध तनावपूर्ण रहे हैं।
- भारत और ईरान ने चाबहार बंदरगाह पर शाहिद बेहेश्टी टर्मिनल विकसित करने के लिए 10 वर्ष के समझौते पर हस्ताक्षर किए, जो बंदरगाह में भारत के दीर्घकालिक हित में एक नए चरण को चिह्नित करता है।

अमेरिका और भारत की दुविधा पर प्रतिक्रिया

- अमेरिका ने चाबहार सौदे से संबंधित संभावित प्रतिबंधों के बारे में चिंता व्यक्त की है।
  - अफगानिस्तान को मानवीय सहायता और समर्थन के लिए पूर्व में दी गई छूट के बावजूद, इस परियोजना के लिए कोई स्पष्ट छूट प्रदान नहीं की गई है।
- भारत पर ईरान के साथ मजबूत द्विपक्षीय संबंध बनाए रखते हुए ईरानी तेल आयात रोकने के लिए अमेरिका का दबाव है
  - भारतीय तेल कम्पनियों ने कथित तौर पर प्रतिबंधों के कारण ईरानी तेल के लिए नए ऑर्डर देना बंद कर दिया है।

निष्कर्ष और आगे की राह

- आगामी अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव ईरान की स्थिति को प्रभावित कर सकते हैं।
- भारत को अमेरिका की ओर से संभावित सख्त कार्रवाइयों पर नज़र रखनी चाहिए और अपनी कूटनीति को सावधानीपूर्वक आगे बढ़ाना चाहिए।
- भारत के पास तेल आयात जारी रखने के लिए अनौपचारिक तरीके खोजने या छूट के लिए अमेरिका के साथ बातचीत करने के अतिरिक्त चाबहार और अन्य परियोजनाओं में निवेश बढ़ाने के अतिरिक्त सीधे अमेरिकी नीति का उल्लंघन किए बिना ईरान के साथ संबंध बनाए रखने के विकल्प भी हैं।

Source:TH

भारत में सूक्ष्म पोषक तत्वों का कुपोषण

सन्दर्भ

- द लांसेट में हाल ही में प्रकाशित एक लेख में अनुमान लगाया गया है कि भारतीय जनसँख्या द्वारा 15 आहार सूक्ष्म पोषक तत्वों का उपभोग अपर्याप्त है।

प्रमुख विशेषताएं

- विश्व भर में 5 बिलियन से अधिक लोग, जो वैश्विक जनसँख्या का 68% है, पर्याप्त आयोडीन का सेवन नहीं करते हैं; 67% लोग पर्याप्त विटामिन ई का सेवन नहीं करते हैं; और 66% कैल्शियम का सेवन करते हैं।
- 4 बिलियन से अधिक लोग (जनसँख्या का 65%) पर्याप्त आयरन का सेवन नहीं करते हैं; 55%, राइबोफ्लेविन; 54%, फोलेट; और 53%, विटामिन सी।

- उसी देश और आयु समूहों में, आयोडीन, विटामिन बी 12, आयरन और सेलेनियम के लिए महिलाओं की तुलना में महिलाओं में अनुमानित अपर्याप्त सेवन अधिक था; और मैग्नीशियम, विटामिन बी 6, जिंक, विटामिन सी, विटामिन ए, थायमिन और नियासिन के लिए महिलाओं की तुलना में पुरुषों में अधिक था।
- दक्षिण एशिया, उप-सहारा अफ्रीका और पूर्वी एशिया और प्रशांत के देशों में कैल्शियम सेवन की अपर्याप्तता सबसे अधिक बताई गई है।
    - इसके अतिरिक्त, इन देशों में सभी आयु-लिंग समूहों में सेवन अपर्याप्तता उच्च थी, लेकिन 10-30 वर्ष की आयु के लोगों में यह सबसे अधिक थी।

सूक्ष्म पोषक तत्व

- सूक्ष्म पोषक तत्व वे विटामिन और खनिज हैं जिनकी शरीर को बहुत कम मात्रा में आवश्यकता होती है।
- विटामिन कार्बनिक यौगिक हैं जिन्हें प्रायः दो समूहों में वर्गीकृत किया जाता है:
    - **पानी में घुलनशील विटामिन:** इनमें विटामिन सी और बी विटामिन (जैसे बी12, बी6, फोलेट) शामिल हैं। ये पानी में घुल जाते हैं और सामान्यतः शरीर में जमा नहीं होते, इसलिए आहार के ज़रिए इनका नियमित सेवन ज़रूरी है।
    - **वसा में घुलनशील विटामिन:** इनमें विटामिन ए, डी, ई और के शामिल हैं। ये आहार वसा के साथ अवशोषित होते हैं और शरीर के वसा ऊतकों और यकृत में जमा हो सकते हैं।
- खनिज अकार्बनिक तत्व हैं जिन्हें निम्न प्रकार वर्गीकृत किया गया है:

प्रमुख खनिज: जैसे कैल्शियम, पोटेशियम और मैग्नीशियम, जिनकी बड़ी मात्रा में आवश्यकता होती है।
लेश खनिज: जैसे लोहा, जस्ता, तांबा और सेलेनियम, जिनकी कम मात्रा में आवश्यकता होती है, लेकिन फिर भी स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण हैं।

सूक्ष्म पोषक तत्वों का महत्व

- वे विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं, जिनमें शरीर को सामान्य वृद्धि और विकास के लिए आवश्यक एंजाइम, हार्मोन तथा अन्य पदार्थों का उत्पादन करने में सक्षम बनाना शामिल है।
    - वे चयापचय प्रक्रियाओं, हड्डियों के विकास और रखरखाव का समर्थन करते हैं, विभिन्न सूक्ष्म पोषक तत्व मस्तिष्क के स्वास्थ्य तथा संज्ञानात्मक कार्य को प्रभावित करते हैं।
    - आयरन, विटामिन बी12 और फोलेट लाल रक्त कोशिकाओं के उत्पादन तथा एनीमिया की रोकथाम के लिए महत्वपूर्ण हैं।
    - विटामिन सी और ए, साथ ही जिंक, ऊतक की मरम्मत और घाव भरने में भूमिका निभाते हैं।
    - कुछ सूक्ष्म पोषक तत्वों का पर्याप्त सेवन पुरानी बीमारियों को रोकने में मदद कर सकता है।
- **सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी** से प्रत्यक्ष और खतरनाक स्वास्थ्य स्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं, लेकिन इससे ऊर्जा स्तर, मानसिक स्पष्टता और समग्र क्षमता में चिकित्सकीय रूप से उल्लेखनीय कमी भी आ सकती है।
    - इससे शैक्षणिक परिणामों में कमी आ सकती है, कार्य उत्पादकता में कमी आ सकती है तथा अन्य बीमारियों और स्वास्थ्य स्थितियों का खतरा बढ़ सकता है।

- इनमें से अनेकों कमियों को पोषण शिक्षा और विविध खाद्य पदार्थों से युक्त स्वस्थ आहार के सेवन के माध्यम से रोका जा सकता है, साथ ही आवश्यकतानुसार भोजन को सुदृढ़ तथा पूरक बनाया जा सकता है।

सूक्ष्म पोषक तत्वों से कुपोषण को लक्षित करने वाली भारत सरकार की पहल

- **राष्ट्रीय पोषण मिशन (पोषण अभियान):** 2018 में शुरू किया गया, इसका उद्देश्य बच्चों, किशोरियों, गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं की पोषण स्थिति में सुधार करके बौनेपन, कुपोषण, एनीमिया और जन्म के समय कम वजन को कम करना है।
- **एकीकृत बाल विकास सेवाएँ (ICDS):** यह छह वर्ष से कम उम्र के बच्चों, गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं के लिए व्यापक सेवाएँ प्रदान करता है। इसका उद्देश्य इन समूहों की पोषण स्थिति और स्वास्थ्य में सुधार करना है।
- **राष्ट्रीय आयरन प्लस पहल (NIPI):** इसे विशेष रूप से बच्चों और महिलाओं में आयरन की कमी से होने वाले एनीमिया से निपटने के लिए शुरू किया गया था। इस पहल में आयरन और फोलिक एसिड की खुराक प्रदान करना शामिल है।
- **खाद्य फोर्टिफिकेशन कार्यक्रम:** फोर्टिफिकेशन कार्यक्रम नमक में आयोडीन (आयोडीन युक्त नमक), गेहूं के आटे में आयरन और फोलिक एसिड और खाद्य तेलों में विटामिन ए जोड़ने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
    - भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (FSSAI) इन फोर्टिफिकेशन मानकों के कार्यान्वयन की देख-रेख करता है।
- **मध्याह्न भोजन योजना (MDMS):** इस योजना के अंतर्गत स्कूली बच्चों को आवश्यक पोषक तत्वों से युक्त निःशुल्क दोपहर का भोजन उपलब्ध कराया जाता है, जिसका उद्देश्य उनके पोषण सेवन को बढ़ाना और नियमित स्कूल उपस्थिति को बढ़ावा देना है।
- **एनीमिया मुक्त भारत (AMB):** इस कार्यक्रम में नियमित रूप से आयरन और फोलिक एसिड की खुराक, कृमि मुक्ति और आयरन युक्त खाद्य पदार्थों के आहार सेवन को बढ़ाने के प्रयास शामिल हैं।
    - इसमें समुदाय-आधारित हस्तक्षेप और जागरूकता अभियानों की आवश्यकता पर भी बल दिया गया है।

Source: TH

आर्थिक विकास के लिए जैव प्रौद्योगिकी का उपयोग

सन्दर्भ

- केंद्र सरकार ने उच्च प्रदर्शन जैव विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए अपनी BioE3 (अर्थव्यवस्था, पर्यावरण और रोजगार के लिए जैव प्रौद्योगिकी) नीति का अनावरण किया।

जैव प्रौद्योगिकी

- जैव प्रौद्योगिकी, आणविक, कोशिकीय और आनुवंशिक प्रक्रियाओं से संबंधित जैविक ज्ञान तथा तकनीकों के अनुप्रयोग से संबंधित है, जिससे महत्वपूर्ण रूप से बेहतर उत्पादों एवं सेवाओं का विकास होता है।
- भारत में जैव प्रौद्योगिकी उद्योग को निम्नलिखित खंडों में विभाजित किया गया है - बायोफार्मास्युटिकल्स, बायो-सर्विसेज, बायो-एग्रीकल्चर, बायो-इंडस्ट्रियल्स और बायो-आईटी।

भारत में जैव प्रौद्योगिकी की स्थिति

- **जैव प्रौद्योगिकी खंड का प्रतिशत हिस्सा है:**
  - बायोफार्मास्युटिकल्स- 62% (57.5 बिलियन डॉलर)
  - बायोएग्रीकल्चर- 13% (11.5 बिलियन डॉलर)
  - बायोइंडस्ट्री- 15% (14.1 बिलियन डॉलर)
  - बायोआईटी और बायोसर्विसेज- 10% (9.3 बिलियन डॉलर)
- जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र को भारत के 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था के लक्ष्य में योगदान देने के लिए प्रमुख चालक के रूप में मान्यता प्राप्त है।
- भारत विश्व में जैव प्रौद्योगिकी के लिए शीर्ष-12 गंतव्यों में से एक है और एशिया प्रशांत में जैव प्रौद्योगिकी के लिए तीसरा सबसे बड़ा गंतव्य है, जिसकी वैश्विक जैव प्रौद्योगिकी उद्योग में लगभग 3% हिस्सेदारी है।
- 2022 में, भारत वैश्विक स्तर पर पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया और मध्य तथा दक्षिणी एशिया में शीर्ष नवाचार अर्थव्यवस्था के रूप में पहचाना गया, जो वैश्विक नवाचार सूचकांक (GII) रिपोर्ट 2023 के अनुसार 40वें स्थान पर है।
- भारतीय जैव प्रौद्योगिकी उद्योग का मूल्य 2022 में $93.1 बिलियन था, जिसके 2030 तक $300 बिलियन तक पहुँचने की उम्मीद है।

भारत में जैव प्रौद्योगिकी की संभावनाएं

- भारत में जैव संसाधनों का विशाल भंडार है, एक असंतृप्त संसाधन जिसका दोहन किया जाना बाकी है और हिमालय में विशाल जैव विविधता तथा अद्वितीय जैव संसाधनों के कारण जैव प्रौद्योगिकी में यह एक लाभ है।
- 1.4 बिलियन की कुल जनसँख्या के साथ, जिसमें से 47% 25 वर्ष से कम आयु के हैं, भारत में युवा और कुशल कार्यबल का एक बड़ा समूह है।
- भारत में जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र ने स्वास्थ्य, चिकित्सा, कृषि, उद्योग और जैव सूचना विज्ञान सहित विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

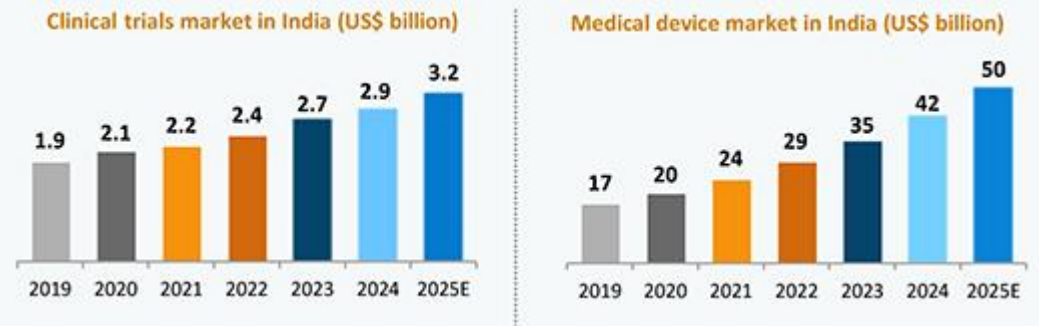

सरकारी पहल

- भारत सरकार (GoI) की नीतिगत पहल जैसे स्टार्टअप इंडिया और मेक इन इंडिया कार्यक्रम का उद्देश्य भारत को विश्व स्तरीय जैव प्रौद्योगिकी और जैव-विनिर्माण केंद्र के रूप में विकसित करना है।
- राष्ट्रीय बायोफार्मा मिशन 150 से अधिक संगठनों और 30 MSMEs सहित 101 परियोजनाओं का समर्थन कर रहा है।
- भारत और फिनलैंड 2022 में द्विपक्षीय सहयोग को आगे बढ़ाने और डिजिटल शिक्षा, भविष्य की मोबाइल प्रौद्योगिकियों, जैव प्रौद्योगिकी तथा ICT में डिजिटल साझेदारी जैसे क्षेत्रों में सहयोग का विस्तार करने पर सहमत हुए।
- जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT) द्वारा स्थापित जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद (BIRAC) का उद्देश्य रणनीतिक अनुसंधान और नवाचार करने के लिए उभरते जैव प्रौद्योगिकी उद्यमों को मजबूत और सशक्त बनाना है।
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT) द्वारा देश भर में जैव प्रौद्योगिकी पार्क और इनक्यूबेटर स्थापित किए गए हैं, ताकि आवश्यक बुनियादी ढांचा सहायता प्रदान करके अनुसंधान को उत्पादों और सेवाओं में परिवर्तित किया जा सके।
- ड्राफ्ट R&D पॉलिसी 2021, PLI योजनाएं और क्लिनिकल ट्रायल नियमों जैसी अनुकूल सरकारी नीतियों ने भारत को विश्व की फार्मेसी' बनने के लिए प्रेरित किया है।
- **FDI नीति:** ग्रीनफील्ड फार्मा के लिए स्वचालित मार्ग के तहत 100% FDI की अनुमति है। साथ ही ब्राउनफील्ड फार्मा के लिए सरकारी मार्ग के तहत 100% FDI की अनुमति है।
    - 74% तक FDI स्वचालित मार्ग के अंतर्गत है, तथा 74% से अधिक FDI सरकारी अनुमोदन मार्ग के अंतर्गत है।

BioE3 नीति

- **BioE3** नीति में पूरे भारत में विभिन्न जैव विनिर्माण केंद्र स्थापित करने की परिकल्पना की गई है।
- इन केंद्रों पर, उद्योग भागीदार और स्टार्ट-अप विशेष रसायन, स्मार्ट प्रोटीन, एंजाइम, कार्यात्मक खाद्य पदार्थ और अन्य जैव-उत्पादों और सेवाओं के उत्पादन के लिए सुविधाएं स्थापित कर सकते हैं।
- ये केंद्र छह क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करेंगे - जैव-आधारित रसायन और एंजाइम, कार्यात्मक खाद्य पदार्थ और स्मार्ट प्रोटीन, सटीक जैव चिकित्सा, जलवायु अनुकूल कृषि, कार्बन कैप्चर और उपयोग, और भविष्य के समुद्री और अंतरिक्ष अनुसंधान।

आगे की राह

- BioE3 नीति सरकार की 'नेट जीरो' कार्बन अर्थव्यवस्था और 'पर्यावरण के लिए जीवनशैली' जैसी पहलों को और मजबूत करेगी और 'सर्कुलर बायोइकोनॉमी' को बढ़ावा देकर भारत को त्वरित 'हरित विकास' के मार्ग पर ले जाएगी।
- यह एक उन्नत भविष्य को बढ़ावा देगा जो वैश्विक चुनौतियों के लिए अधिक सतत, नवीन तथा उत्तरदायी होगा और विकसित भारत के लिए जैव-दृष्टिकोण निर्धारित करेगा।

Source: IE

संक्षिप्त समाचार

ना अंका अकाल

सन्दर्भ

- हाल ही में, केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने रेवेनशॉ विश्वविद्यालय का नाम परिवर्तित का प्रस्ताव रखा क्योंकि उनका मानना है कि ना अंका अकाल रेवेनशॉ के कार्यकाल के दौरान हुआ था।

ना अनका दुरभिक्ष्य (1866) (उर्फ महान ओडिशा अकाल) के बारे में

- रावेनशॉ विश्वविद्यालय की स्थापना से ठीक दो वर्ष पहले ओडिशा में भयावह अकाल पड़ा था - ना अंका अकाल।
  - ओडिशा के प्राचीन शहर कटक में स्थित रेवेन्शॉ विश्वविद्यालय की स्थापना 1868 में हुई थी।
- **गंभीरता:** अकाल इतना भयंकर था कि इस दुखद अवधि के दौरान ओडिशा की लगभग एक तिहाई आबादी नष्ट हो गई।
- **शासन वर्ष:** यह ओडिशा के गजपति राजा दिव्य सिंह देव के 9वें शासन वर्ष में हुआ था।

थॉमस एडवर्ड रेवेनशॉ की भूमिका

- थॉमस एडवर्ड रेवेनशॉ, एक ब्रिटिश नौकरशाह थे, जिन्होंने इस उथल-पुथल भरे दौर में ओडिशा डिवीजन के औपनिवेशिक आयुक्त का पद संभाला था।
- उन्होंने अकाल की भयावहता को अपने सामने देखा था।

कारण और प्रभाव

- **संचार संबंधी चुनौतियाँ:** अकाल से पहले, उड़ीसा को संचार और संपर्क के मामले में महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिससे संकट के समय आवश्यक आपूर्ति तक पहुँचना मुश्किल हो गया।
- **दुर्गमता:** व्यापार और संचार के मामले में उड़ीसा वस्तुतः विश्व से बाहर' था, जिसने अकाल के प्रभावों को और बढ़ा दिया।

- विनाशकारी अकाल के जवाब में, 1866 के अकाल आयोग ने भविष्य में इसी तरह की आपदाओं को रोकने के लिए उड़ीसा में संचार में सुधार की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डाला।
- आयोग ने व्यापार और आवागमन को सुविधाजनक बनाने के लिए कटक (उड़ीसा में) को कलकत्ता (अब कोलकाता) से जोड़ने वाली एक ट्रंक रोड के शीघ्र निर्माण की सिफारिश की, तथा सिंचाई नहरों को नौगम्य बनाने का सुझाव दिया (उड़ीसा तट नहर का निर्माण 1880-81 में शुरू हुआ)।

Source: IE

कोको (थियोब्रोमा काकाओ)

संदर्भ

- कैलिफोर्निया कल्चर्ड, एक पादप कोशिका संवर्धन कंपनी, कैलिफोर्निया स्थित एक प्रयोगशाला में कोशिका संवर्धन से कोको का उत्पादन कर रही है।

परिचय

- कोको का पेड़ मालवेसी परिवार का एक सदाबहार पेड़ है।
- फूल सीधे तने और पुरानी शाखाओं (कॉलिफ्लोरी) पर गुच्छों में उगते हैं। फूल छोटे, 1-2 सेमी व्यास के, गुलाबी रंग के कैलिक्स वाले होते हैं।
- फल, जिसे कोको पॉड कहा जाता है, अंडाकार होता है, जो पीले से नारंगी रंग का होता है, और इसमें 20 से 60 बीज होते हैं।
    - बीजों को "बीन्स" कहा जाता है, जो सफ़ेद गूदे में समाहित होते हैं।
    - कोको बीन्स का उपयोग चॉकलेट लिकर, कोको सॉलिड, कोको बटर और चॉकलेट बनाने के लिए किया जाता है।

वृद्धि की स्थितियाँ

- यह भूमध्य रेखा के लगभग 20 डिग्री उत्तर और दक्षिण में गर्म मौसम एवं प्रचुर वर्षा वाले क्षेत्रों में बढ़ता है, जिसमें पश्चिमी अफ्रीका तथा दक्षिण अमेरिका शामिल हैं।
- कोको को गहरी और अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी की आवश्यकता होती है। कोको की खेती के अंतर्गत अधिकांश क्षेत्र चिकनी दोमट एवं रेतीली दोमट मिट्टी पर है।
- इसके लिए 15°-35°C के बीच तापमान की आवश्यकता होती है, जिसमें 25°C इष्टतम है।

Source: TH

अपराजिता बिल

सन्दर्भ

- पश्चिम बंगाल विधानसभा ने सर्वसम्मति से अपराजिता महिला एवं बाल (पश्चिम बंगाल आपराधिक कानून संशोधन) विधेयक, 2024 पारित कर दिया।

प्रमुख विशेषताएं

- यह भारतीय न्याय संहिता (BNS) 2023 की विभिन्न धाराओं में बदलाव की मांग करता है ताकि बलात्कार, सामूहिक बलात्कार और हत्या के मामलों में 10 या 20 वर्ष की जेल की सजा को मौत की सजा या दोषी के शेष जीवन के लिए कारावास से परिवर्तित किया जा सके।
- विधेयक में तीन महत्वपूर्ण तत्व सम्मिलित हैं - बढ़ी हुई सजा, त्वरित जांच और न्याय का त्वरित वितरण, विशेष रूप से भारतीय न्याय संहिता और यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण (POCSO) अधिनियम के तहत यौन उत्पीड़न के मामलों को लक्षित करना।
- राज्य सरकार समय पर जांच पूरी करने के लिए राज्य पुलिस के बीच से एक विशेष 'अपराजिता टास्क फोर्स' बनाएगी।
- विधेयक में बलात्कार के दोषी लोगों के लिए मृत्युदंड का प्रावधान है, अगर उनके कार्यों के परिणामस्वरूप पीड़िता की मृत्यु हो जाती है या वह अचेत अवस्था में चली जाती है। कानून में यह भी आवश्यक है कि बलात्कार के मामलों की जांच प्रारंभिक रिपोर्ट के 21 दिनों के अंदर पूरी हो जानी चाहिए।
- विधेयक को पश्चिम बंगाल के भौगोलिक क्षेत्राधिकार में कानून बनने के लिए संविधान के अनुच्छेद 254(2) के तहत राष्ट्रपति की मंजूरी की आवश्यकता होगी।
    - अनुच्छेद 254(2) के अनुसार, राज्य विधानमंडल समवर्ती सूची में उल्लिखित किसी विषय पर वर्तमान संघीय कानून में संशोधन करने की मांग कर सकता है, लेकिन राष्ट्रपति की सहमति के बिना यह कानून नहीं बन सकता।

Source: TH

विषाणु युद्ध अभ्यास

समाचार में

- केंद्र सरकार ने विषाणु युद्ध अभ्यास (वायरस युद्ध अभ्यास) नाम से पांच दिवसीय मॉक ड्रिल का आयोजन किया।

विषाणु युद्ध अभ्यास के बारे में

- यह अभ्यास राजस्थान के अजमेर जिले में पाँच दिनों तक चला।
- यह राष्ट्रीय एक स्वास्थ्य मिशन (NOHM) के तहत आयोजित किया जाता है।
- इसका उद्देश्य महामारी की तैयारियों और जूनोटिक बीमारी के प्रकोप के प्रति प्रतिक्रिया का आकलन करना है।
    - जूनोटिक रोगों में लोगों और जानवरों के बीच फैलने वाले संक्रमण शामिल हैं, जैसे एवियन इन्फ्लूएंजा, निपाह तथा जीका, जो वायरस, बैक्टीरिया, परजीवी एवं कवक के कारण होते हैं।
- **उद्देश्य:** राष्ट्रीय संयुक्त प्रकोप प्रतिक्रिया दल (NJORT) की तत्परता और प्रतिक्रिया का मूल्यांकन करना, जिसमें मानव स्वास्थ्य, पशुपालन और वन्यजीव क्षेत्रों के विशेषज्ञ शामिल हैं।

- **परिणाम:** इस अभ्यास ने जूनोटिक रोग प्रकोपों के प्रति भारत की तैयारी तथा प्रतिक्रिया को बेहतर बनाने के लिए बहुमूल्य जानकारी प्रदान की और संबंधित क्षेत्रों में समन्वित एवं कुशल दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया।

Source: PIB

ब्रुनेई दारुस्सलाम

सन्दर्भ

- हाल ही में, भारत के प्रधानमंत्री ब्रुनेई दारुस्सलाम की यात्रा पर गए, जो किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली द्विपक्षीय यात्रा होगी।

ब्रुनेई दारुस्सलाम (जिसे प्रायः ब्रुनेई कहा जाता है) के बारे में

- यह दक्षिण-पूर्व एशिया का एक छोटा सा सल्तनत है, तथा जनसंख्या की दृष्टि से दक्षिण-पूर्व एशिया का सबसे छोटा देश है, जिसकी जनसंख्या पांच लाख से भी कम है।
    - ब्रुनेई एक निरंकुश राजतंत्र है, और इसके राष्ट्रप्रमुख सुल्तान हसनल बोल्किया हैं।
- भौगोलिक दृष्टि से, यह बोर्नियो द्वीप के उत्तरी भाग पर एक तटीय पट्टी पर स्थित है, जो मलेशियाई राज्य सारावाक से घिरा हुआ है।

- इसकी मुख्य रूप से मलय-मुस्लिम जनसँख्या है, और इसका आधिकारिक धर्म इस्लाम है।

तेल संपदा और अर्थव्यवस्था

- ब्रुनेई तेल और प्राकृतिक गैस के भंडारों से समृद्ध है। इसकी अर्थव्यवस्था हाइड्रोकार्बन निर्यात पर बहुत अधिक निर्भर है।

भारत-ब्रुनेई संबंध

- **रक्षा:** क्षेत्र में सुरक्षा और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए रक्षा संबंधों को दृढ करना।
- **अंतरिक्ष:** अंतरिक्ष से संबंधित प्रयासों में सहयोग की संभावनाएं तलाशना।
- **लोगों के बीच आपसी संबंध:** भारत और ब्रुनेई के नागरिकों के बीच दृढ संबंधों को बढ़ावा देना।
- प्रधानमंत्री की यह यात्रा भारत और ब्रुनेई के बीच राजनयिक संबंधों की 40वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित की गई है।
- ब्रुनेई भारत की एक्ट ईस्ट नीति और इंडो-पैसिफिक विजन में एक महत्वपूर्ण साझेदार है।

Source: TH

निवेशक शिक्षा और संरक्षण निधि प्राधिकरण

सन्दर्भ

- निवेशक शिक्षा एवं संरक्षण निधि प्राधिकरण (IEPFA) ने दावेदार सहायता सेवाओं को बढ़ाने के अपने सतत प्रयासों के तहत एक नया टोल-फ्री नंबर शुरू किया है।

परिचय

- इसे उपयोगकर्ताओं को उन्नत, बहुभाषी इंटरैक्टिव वॉयस रिस्पांस सिस्टम (IVRS) और एक उन्नत कॉल सेंटर तक पहुंच प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- यह पहल कॉर्पोरेट अनुपालन को सुव्यवस्थित करने और उपयोगकर्ता अनुभव को बेहतर बनाने के लिए कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय के व्यापक प्रयासों के अनुरूप है।

IEPFA का परिचय:

- इसकी स्थापना 2016 में कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय के अंतर्गत की गई थी।
- IEPFA निवेशक शिक्षा और संरक्षण कोष के प्रबंधन के लिए उत्तदायी है, जो शेयरों, दावा न किए गए लाभांश और परिपक्व जमा/डिबेंचर की वापसी की सुविधा प्रदान करके निवेशकों के हितों की रक्षा करने पर केंद्रित है।
- अपनी पहलों के माध्यम से, IEPFA का उद्देश्य पारदर्शिता सुनिश्चित करना, निवेशकों के अधिकारों की रक्षा करना और पूरे देश में वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देना है।

Source: PIB

पूंजी बाज़ारों का वित्तीयकरण

सन्दर्भ

- मुख्य आर्थिक सलाहकार (CEA) वी. अनंथा नागेश्वरन ने आगाह किया कि पूंजी बाजार के वित्तीयकरण से व्यापक आर्थिक परिणाम विकृत हो सकते हैं।

परिचय

- पूंजी बाजारों का वित्तीयकरण सार्वजनिक नीति में वित्तीय बाजारों की भूमिका का प्रभुत्व है।
- भारत का शेयर बाजार पूंजीकरण उसके सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 140% है जो वित्तीयकरण के उच्च स्तर को दर्शाता है।

परिणाम

- जबकि उच्च बाजार पूंजीकरण एक दृढ वित्तीय क्षेत्र का संकेत देता है, यह यह भी सुझाव देता है कि अर्थव्यवस्था वास्तविक अर्थव्यवस्था के बजाय वित्तीय बाजारों पर अत्यधिक निर्भर है।
- वित्तीय क्षेत्र की रिकॉर्ड लाभप्रदता आय असमानता को बढ़ाती है, क्योंकि वित्तीयकरण से लाभ सामान्यतः जनसँख्या के एक छोटे से भाग को मिलता है।

- उन्नत अर्थव्यवस्थाओं ने सार्वजनिक और निजी ऋण दोनों के अभूतपूर्व स्तर देखे हैं, जो काफी हद तक वित्तीयकरण प्रक्रिया द्वारा संचालित हैं।
- वित्तीय अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक विकास प्रायः स्टॉक, बॉन्ड और रियल एस्टेट जैसी परिसंपत्तियों की कीमतों की निरंतर मुद्रास्फीति पर निर्भर करता है।
    - इससे परिसंपत्ति बुलबुले उत्पन्न हो सकते हैं, जो फटने पर गंभीर आर्थिक मंदी का कारण बन सकते हैं।

Source: TH

DAC द्वारा पूंजी अधिग्रहण प्रस्ताव

समाचार में

- रक्षा अधिग्रहण परिषद (DAC) ने कुल 1,44,716 करोड़ रुपये के 10 पूंजी अधिग्रहण प्रस्तावों के लिए आवश्यकता की स्वीकृति (AoN) प्रदान की है।

रक्षा अधिग्रहण परिषद(DAC) के बारे में

- यह सैन्य खरीद के लिए शीर्ष निर्णय लेने वाला निकाय है और आवश्यकता की स्वीकृति (AoN) के रूप में जाना जाता है - सैन्य उपकरण खरीदने की दिशा में पहला कदम।
- इसकी अध्यक्षता रक्षा मंत्री करते हैं।
- इसका उद्देश्य आवंटित बजटीय संसाधनों का इष्टतम उपयोग करके मांगी गई क्षमताओं और निर्धारित समय सीमा के संदर्भ में सशस्त्र बलों की स्वीकृत आवश्यकताओं की शीघ्र खरीद सुनिश्चित करना है।

स्वीकृत परियोजनाएं:

- **स्टील्थ फ्रिगेट्स:** प्रोजेक्ट-17B के तहत सात स्टील्थ फ्रिगेट्स की खरीद।
- **भविष्य के लिए तैयार लड़ाकू वाहन (FRCV):** T-72 और T-90 टैंकों के स्थान लेने वाले मुख्य युद्धक टैंक।
- **वायु रक्षा अग्नि नियंत्रण रडार (FCR):** हवाई लक्ष्यों का पता लगाने और उन पर नज़र रखने के लिए।
    - ये रडार हवाई खतरों का पता लगाने, ट्रैकिंग करने और फायरिंग के समाधान उपलब्ध कराएंगे।
- **डोर्नियर-228 विमान:** विभिन्न परिचालन आवश्यकताओं के लिए।
- **गश्ती जहाज:** अगली पीढ़ी के तेज़ गश्ती जहाज और अपतटीय गश्ती जहाज।
- **स्वदेशी स्रोत:** खरीद लागत का 99% स्वदेशी स्रोतों से होगा, खरीदें (भारतीय) और खरीदें (भारतीय-स्वदेशी रूप से डिजाइन, विकसित और निर्मित) श्रेणियों के तहत।
- **शिपयार्ड निर्माण:** स्टील्थ फ्रिगेट का निर्माण सार्वजनिक क्षेत्र के शिपयार्ड गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स (GRSE) और मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (MDL) द्वारा किया जाएगा।
- **भारतीय तटरक्षक (ICG) संवर्द्धन: तीन AoNs को मंजूरी दी गई:**
    - **डोर्नियर-228 विमान:** बेहतर निगरानी और गश्त के लिए।
    - **अगली पीढ़ी के तेज़ गश्ती जहाज:** खराब मौसम में उच्च परिचालन सुविधाओं के लिए।
    - **अगली पीढ़ी के अपतटीय गश्ती जहाज:** उन्नत प्रौद्योगिकी और लंबी दूरी के संचालन के लिए।

Source:TH

■■■■